RNI No. 46431/87

श्रीगंगानगर

गंगानगर अ

हनुमान

राजस्थान में मूंगफली व सरसों की खेती को और बढ़ावा देने की जरूरतः पद्म भूषण प्रो. रामबदनसिंह

श्रीगंगानगर। केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय इम्फाल के पूर्व कुलाधिपति व कृषि वैज्ञानिक चयन मंडल नई दिल्ली के पूर्व अध्यक्ष पद्मभूषण प्रो. रामबदनसिंह ने कहा है कि राजस्थान में मूंगफली और सरसों की खेती को और बढ़ावा देने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि भारत हर साल खाने के तेल का करीब 60 फीसदी विदेश से आयात कर देश में आपूर्ति करता है। जिस पर प्रतिवर्ष करीब 50 हजार करोड़ रू. खर्च होते हैं। प्रो. सिंह ने कहा कि राजस्थान मूंगफली और सरसों के उत्पादन में पूरे देश में अग्रणी है लिहाजा राजस्थान और देश के अन्य राज्यों में जहां मूंगफली और सरसों का उत्पादन होता है, उसे बढ़ाने की जरूरत है। इससे हम प्रतिवर्ष 5 से10 फीसदी तक खाने के तेल का उत्पादन बढ़ा सकेंगे और आने वाले चार पांच सालों में ही भारत खाने के तेल को आयात करने से मुक्त हो सकता है।

प्रो. सिंह आज बीकानेर में कृषि विज्ञान केन्द्र की ओर से स्वामी केशवानंद कृषि विश्वविद्यालय के विवेकानंद संग्रहालय सभागार में आयोजित मूंगफली उत्पादन की उन्नत तकनीकी कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। कार्यक्रम में समूह प्रथम पंक्ति प्रदर्शन के तहत मंडाल, बीठनोक, बेनीसर, शोभासर, कावनी गांव के कुल 110 किसानों को मूंगफली की किस्म आरजी-110 का प्रदर्शन लगाने के लिए 20-20 किलो आदान प्रदान किया गया।

प्रो. सिंह ने बताया कि पूरे विश्व के श्री अन्न (मिलेट्स) का 40 फीसदी उत्पादन भारत में होता है और भारत के कुल मिलेट्स उत्पादन का 50 फीसदी हिस्सा राजस्थान से आता है लिहाजा राजस्थान पूरे विश्व में श्री अन्न (मिलेट्स) के उत्पादन में अग्रणी भूमिका निभा सकता है।

उन्होंने बताया कि श्री अन्न का पौधा वातावरण की कार्बन-डाइ-ऑक्साइड को ग्रहण कर उसे जमीन और प्लांट में डालता है और ऑक्सीजन छोड़ता है लिहाजा श्री अन्न इस प्लानेट को शुद्ध कर रहा है। क्लाइमेट चेंज के तनाव को कम कर रहा है। प्रो. सिंह ने बताया कि कार्बन इकोनॉमी को लेकर यूनाइटेड नेशन्स ने बहुत बड़ा फंड इकट्ठा किया है। इस फंड को भारत सरकार यूनाइटेड नेशन्स से लेकर मिलेट्स के किसानों को बांटे ताकि मिलेट्स की खेती को और बढ़ावा दिया जा सके। उन्होंने बताया कि मिलेट्स में गेहूं से तीन गुना ज्यादा और चावल से दस गुना ज्यादा फाइबर होता है। लिहाजा मिलेट्स उत्पादन को प्रमोट करने की आवश्यकता है। साथ ही बताया कि पिछले साल दिल्ली में हुए जी-20 सम्मेलन में भारत की अंतरराष्ट्रीय स्तर पर महत्व बढ़ाने में मिलेट्स उत्पादन में नंबर वन होने के चलते राजस्थान ने अहम भूमिका निभाई। यूनाइटेड नेशन्स ने मिलेट्स की महत्ता को देखते हुए ही वर्ष 2023 को अंतर्राष्ट्रीय श्री अन्न वर्ष घोषित किया था। इससे पहले कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ अरूण कुमार ने कहा कि फसलों के मूल्य संवर्धन से किसान अपनी आय बढ़ा सकता है। अनुसंधान निदेशक डॉ पीएस शेखावत ने किसानों को समय पर बुवाई, बीज को उपचारित कर बोने, बीज की सही मात्रा बोने समेत अन्य जानकारी दी। प्रसार निदेशक डॉ सुभाष चंद्र ने केवीके के कार्यों व उनकी उपलब्धियों के बारे में विस्तार से बताया। किसानों ने भी अपनी समस्याएं कृषि वैज्ञानिकों को बताई। उपनिदेशक प्रसार डॉ राजेश कुमार वर्मा ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

कार्यक्रम में सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय की अधिष्ठाता डॉ विमला डुकवाल, भू सादृश्यता एवं राजस्व सृजन निदेशक डॉ दाताराम, मानव संसाधन निदेशालय निदेशक डॉ ए.के.शर्मा, डीपीएमई डॉ योगेश शर्मा, अतिरिक्त निदेशक बीज डॉ पी.सी.गुप्ता, इं जे.के.गौड़, केवीके अध्यक्ष डॉ दुर्गा सिंह, कृषि पर्यवेक्षक राजेन्द्र सिंह शेखावत समेत बड़ी संख्या में किसान उपस्थित रहे। मंच संचालन डॉ केशव मेहरा ने किया

खबर एक्सप्रेस

पूरे विश्व में राजस्थान निभा सकता है श्री अन्न उत्पादन में अग्रणी भूमिका- पद्म भूषण प्रो. राम बदन सिंह

खबर एक्सप्रेस

समूह प्रथम पंक्ति प्रदर्शन के तहत कुल 110 किसानों को मूंगफली का आदान प्रदान किया गया

बीकानेर, 12 जून। केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय इम्फाल के पूर्व कुलाधिपति व कृषि वैज्ञानिक चयन मंडल नई दिल्ली के पूर्व अध्यक्ष पद्मभूषण प्रो. राम बदन सिंह ने कहा है कि राजस्थान में मूंगफली और सरसों की खेती को और बढ़ावा देने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि भारत हर साल खाने के तेल का करीब 60 फीसदी विदेश से आयात कर देश में आपूर्ति करता है। जिस पर प्रतिवर्ष करीब 50 हजार करोड़ रू. खर्च होते हैं। प्रो. सिंह ने कहा कि राजस्थान मूंगफली और सरसों के उत्पादन में पूरे देश में अग्रणी है लिहाजा राजस्थान और देश के अन्य राज्यों में जहां मूंगफली और सरसों का उत्पादन होता है, उसे बढ़ाने की जरूरत है। इससे हम प्रतिवर्ष 5 से10 फीसदी तक खाने के तेल का उत्पादन बढ़ा सकेंगे और आने वाले चार पांच सालों में ही भारत खाने के तेल को आयात करने से मुक्त हो सकता है।

प्रो. सिंह बुधवार को कृषि विज्ञान केन्द्र बीकानेर की ओर से स्वामी केशवानंद कृषि विश्वविद्यालय के विवेकानंद संग्रहालय सभागार में आयोजित मूंगफली उत्पादन की उन्नत तकनीकी कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। कार्यक्रम में समूह प्रथम पंक्ति प्रदर्शन के तहत मंडाल, बीठनोक, बेनीसर, शोभासर, कावनी गांव के कुल 110 किसानों को मूंगफली की किस्म आरजी-110 का प्रदर्शन लगाने के लिए 20-20 किलो आदान प्रदान किया गया। प्रो. सिंह ने बताया कि पूरे विश्व के श्री अन्न (मिलेट्स) का 40 फीसदी उत्पादन भारत में होता है और भारत के कुल मिलेट्स उत्पादन का 50 फीसदी हिस्सा राजस्थान से आता है लिहाजा राजस्थान पूरे विश्व में श्री अन्न (मिलेट्स) के उत्पादन में अग्रणी भूमिका निभा सकता है। उन्होंने बताया कि श्री अन्न का पौधा वातावरण की कार्बन-डाइ-ऑक्साइड को ग्रहण कर उसे जमीन और प्लांट में डालता है और ऑक्सीजन छोड़ता है लिहाजा श्री अन्न इस प्लानेट को शुद्ध कर रहा है। क्लाइमेट चेंज के तनाव को कम कर रहा है।

प्रो. सिंह ने बताया कि कार्बन इकोनॉमी को लेकर यूनाइटेड नेशन्स ने बहुत बड़ा फंड इकट्ठा किया है। इस फंड को भारत सरकार यूनाइटेड नेशन्स से लेकर मिलेट्स के किसानों को बांटे ताकि मिलेट्स की खेती को और बढ़ावा दिया जा सके। उन्होंने बताया कि मिलेट्स में गेहूं से तीन गुना ज्यादा और चावल से दस गुना ज्यादा फाइबर होता है। लिहाजा मिलेट्स उत्पादन को प्रमोट करने की आवश्यकता है। साथ ही बताया कि पिछले साल दिल्ली में हुए जी-20 सम्मेलन में भारत की अंतरराष्ट्रीय स्तर पर महत्व बढ़ाने में मिलेट्स उत्पादन में नंबर वन होने के चलते राजस्थान ने अहम भूमिका निभाई। यूनाइटेड नेशन्स ने मिलेट्स की महत्ता को देखते हुए ही वर्ष 2023 को अंतर्राष्ट्रीय श्री अन्न वर्ष घोषित किया था।

इससे पूर्व कुलपति डॉ अरुण कुमार ने कहा कि फसलों के मूल्य संवर्धन से किसान अपनी आय बढ़ा सकता है। अनुसंधान निदेशक डॉ पीएस शेखावत ने किसानों को समय पर बुवाई, बीज को उपचारित कर बोने, बीज की सही मात्रा बोने समेत अन्य जानकारी दी। प्रसार निदेशक डॉ सुभाष चंद्र ने केवीके के कार्यों व उनकी उपलब्धियों के बारे में विस्तार से बताया। किसानों ने भी अपनी समस्याएं कृषि वैज्ञानिकों को बताई। उपनिदेशक प्रसार डॉ राजेश कुमार वर्मा ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

कार्यक्रम में सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय की अधिष्ठाता डॉ विमला डुकवाल, भू सादृश्यता एवं राजस्व सृजन निदेशक डॉ दाताराम, मानव संसाधन निदेशालय निदेशक डॉ ए.के.शर्मा, डीपीएमई डॉ योगेश शर्मा, अतिरिक्त निदेशक बीज डॉ पी.सी.गुप्ता, ई जे.के. गौड़, केवीके अध्यक्ष डॉ दुर्गा सिंह, कृषि पर्यवेक्षक श्री राजेन्द्र सिंह शेखावत समेत बड़ी संख्या में किसान उपस्थित रहे। मंच संचालन डॉ केशव मेहरा ने किया।

केवीके बीकानेर के मूंगफली उत्पादन की उन्नत तकनीकी कार्यक्रम में बोले प्रो. सिंह

राजस्थान में मूंगफली-सरसों की खेती को और बढ़ावा देने की जरूरत-पद्मभूषण प्रो. रामबदन सिंह

समूह प्रथम पंक्ति प्रदर्शन के तहत कुल 110 किसानों को मूंगफली का आदान प्रदान किया गया

बीकानेर, (निसं)। केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय इम्फाल के पूर्व कुलाधिपति व कृषि वैज्ञानिक चयन मंडल नई दिल्ली के पूर्व अध्यक्ष पद्मभूषण प्रो. राम बदन सिंह ने कहा है कि राजस्थान में मूंगफली और सरसों की खेती को और बढ़ावा देने की जरूरत है। उन्होने कहा कि भारत हर साल खाने के तेल का करीब 60 फीसदी विदेश से आयात कर देश में आपूर्ति करता है। जिस पर प्रतिवर्ष करीब 50 हजार करोड़ रू. खर्च होते हैं। प्रो. सिंह ने कहा कि राजस्थान मूंगफली और सरसों के उत्पादन में पूरे देश में अग्रणी है लिहाजा राजस्थान और देश के अन्य राज्यों में जहां मूंगफली और सरसों का उत्पादन होता है, उसे बढ़ाने की जरूरत है। इससे हम प्रतिवर्ष 5 से10 फीसदी तक खाने के तेल का उत्पादन बढ़ा सकेंगे और आने वाले चार पांच सालों में ही भारत खाने के तेल को आयात करने से

मुक्त हो सकता है।

प्रो. सिंह बुधवार को कृषि विज्ञान केन्द्र बीकानेर की ओर से स्वामी केशवानंद कृषि विश्वविद्यालय के विवेकानंद संग्रहालय सभागार में आयोजित मूंगफली उत्पादन की उन्नत तकनीकी कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। कार्यक्रम में समूह प्रथम पंक्ति प्रदर्शन के तहत मंडाल, बीठनोक, बेनीसर, शोभासर, कावनी गांव के कुल 110 किसानों को मूंगफली की किस्म आरजी-110 का प्रदर्शन लगाने के लिए 20-20 किलो आदान प्रदान किया गया।

प्रो. सिंह ने बताया कि पूरे विश्व के श्री अन्न (मिलेट्स) का 40 फीसदी उत्पादन भारत में होता है और भारत के कुल मिलेट्स उत्पादन का 50 फीसदी हिस्सा राजस्थान से आता है लिहाजा राजस्थान पूरे विश्व में श्री अन्न (मिलेट्स) के उत्पादन में अग्रणी भूमिका निभा सकता है। उन्होने बताया कि श्री अन्न का पौधा वातावरण की कार्बन-डाइ-ऑक्साइड को ग्रहण कर उसे जमीन और प्लांट में डालता है और ऑक्सीजन छोड़ता है लिहाजा श्री अन्न इस प्लानेट को शुद्ध कर रहा है। क्लाइमेट चेंज के तनाव को कम कर रहा है। इससे पूर्व कुलपति डॉ अरूण कुमार ने कहा कि फसलों के मूल्य संवर्धन से किसान अपनी आय बढ़ा सकता है। अनुसंधान निदेशक डॉ पीएस शेखावत ने किसानों को समय पर बुवाई, बीज को उपचारित कर बोने, बीज की सही मात्रा बोने समेत अन्य जानकारी दी। प्रसार निदेशक डॉ सुभाष चंद्र ने केवीके के कार्यों व उनकी उपलब्धियों के बारे में विस्तार से बताया।

दैनिक भास्कर

बीकानेर 13-06-2024

मूंगफली उत्पादन की उन्नत तकनीक पर कार्यक्रमः राजस्थान श्रीअन्न उत्पादन में बन सकता है अग्रणी

राजस्थान में मूंगफली और सरसों की खेती को और बढ़ावा देने की जरूरत : पद्म भूषण प्रो. राम बदन

सिटी रिपोर्टर | बीकानेर

केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय इम्फाल के पूर्व कुलाधिपति व कृषि वैज्ञानिक चयन मंडल नई दिल्ली के पूर्व अध्यक्ष पद्मभूषण प्रो. राम बदन सिंह ने कहा है कि राजस्थान में मूंगफली और सरसों की खेती को और बढ़ावा देने की जरूरत हैं। उन्होंने कहा कि भारत हर साल खाने के तेल का करीब 60 फीसदी विदेश से आयात कर देश में आपूर्ति करता है। जिस पर प्रतिवर्ष करीब 50 हजार करोड़ रू. खर्च होते हैं। प्रो. सिंह ने कहा कि राजस्थान मूंगफली और सरसों के उत्पादन में पूरे देश में अग्रणी है लिहाजा राजस्थान और देश के अन्य राज्यों में जहां मूंगफली और सरसों का उत्पादन होता है, उसे बढ़ाने की जरूरत है। इससे हम प्रतिवर्ष 5 से10 फीसदी तक खाने के तेल का उत्पादन बढ़ा सकेंगे और आने वाले चार पांच सालों में ही भारत खाने के तेल को आयात करने से मुक्त हो सकता है।

प्रो. सिंह बुधवार को कृषि विज्ञान केन्द्र बीकानेर की ओर से स्वामी केशवानंद कृषि विश्वविद्यालय के विवेकानंद संग्रहालय सभागार में आयोजित मूंगफली उत्पादन की उन्नत तकनीकी कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। कार्यक्रम में समूह प्रथम पंक्ति प्रदर्शन के तहत मंडाल, बीठनोक, बेनीसर, शोभासर, कावनी गांव के कुल 110 किसानों को मूंगफली की किस्म आरजी-110 का प्रदर्शन लगाने के लिए आदान प्रदान किया गया।

प्रो. सिंह ने बताया कि पूरे विश्व के श्री अन्न (मिलेट्स) का 40 फीसदी उत्पादन भारत में होता है और भारत के कुल मिलेट्स उत्पादन का 50 फीसदी हिस्सा राजस्थान से आता है लिहाजा राजस्थान पूरे विश्व में श्री अन्न (मिलेट्स) के उत्पादन में अग्रणी भूमिका निभा सकता है। श्री अन्न का पौधा वातावरण की कार्बन-डाइ-ऑक्साइड को ग्रहण कर उसे जमीन और प्लांट में डालता है और ऑक्सीजन छोड़ता है लिहाजा श्री अन्न इस प्लानेट को शुद्ध कर रहा है। क्लाइमेट चेंज के तनाव को कम कर रहा है। प्रो. सिंह ने बताया कि कार्बन इकोनॉमी को लेकर यूनाइटेड नेशन्स ने बहुत बड़ा फंड इकट्ठा किया है। इस फंड को भारत सरकार यूनाइटेड नेशन्स से लेकर मिलेट्स के किसानों को बांटे ताकि मिलेट्स की खेती को और बढ़ावा दिया जा सके। उन्होंने बताया कि मिलेट्स में गेहूं से तीन गुना ज्यादा और चावल से दस गुना ज्यादा फाइबर होता है।

इससे पूर्व कुलपति डॉ अरूण कुमार ने कहा कि फसलों के मूल्य संवर्धन से किसान अपनी आय बढ़ा सकता है। अनुसंधान निदेशक डॉ पीएस शेखावत ने किसानों को समय पर बुवाई, बीज को उपचारित कर बोने, बीज की सही मात्रा बोने समेत अन्य जानकारी दी। प्रसार निदेशक डॉ सुभाष चंद्र ने केवीके के कार्यों व उनकी उपलब्धियों के बारे में विस्तार से बताया। किसानों ने भी अपनी समस्याएं कृषि वैत्रानिकों को बताई।

राजस्थान में मूंगफली और सरसों की खेती को और बढ़ावा देने की जरूरत-पद्म भूषण प्रो. राम बदन सिंह

पूरे विश्व में राजस्थान निभा सकता है श्री अन्न (मिलेट्स) उत्पादन में अग्रणी भूमिका- पद्म भूषण प्रो. राम बदन सिंह

केवीके बीकानेर के मूंगफली उत्पादन की उन्नत तकनीकी कार्यक्रम में बोले प्रो. सिंह

समूह प्रथम पंक्ति प्रदर्शन के तहत कुल 110 किसानों को मूंगफली का आदान प्रदान किया गया

हिंदुस्तान से रूबरू

बीकानेर(सुरेश जैन) केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय इम्फाल के पूर्व कुलाधिपति व कृषि वैज्ञानिक चयन मंडल नई दिल्ली के पूर्व अध्यक्ष पद्मभूषण प्रो. राम बदन सिंह ने कहा है कि राजस्थान में मूंगफली और सरसों की खेती को और बढ़ावा देने की जरूरत है। उन्होने कहा कि भारत हर साल खाने के तेल का करीब 60 फीसदी विदेश से आयात कर देश में आपूर्ति करता है। जिस पर प्रतिवर्ष करीब 50 हजार करोड़ रू. खर्च होते हैं। प्रो. सिंह ने कहा कि राजस्थान मूंगफली और सरसों के उत्पादन में पूरे देश में अग्रणी है लिहाजा राजस्थान और देश के अन्य राज्यों में जहां मूंगफली और सरसों का उत्पादन होता है, उसे बढ़ाने की जरूरत है। इससे हम प्रतिवर्ष 5 से10 फीसदी तक खाने के तेल का उत्पादन बढ़ा सकेंगे और आने वाले चार पांच सालों में ही भारत खाने के तेल को आयात करने से मुक्त हो सकता है।

प्रो. सिंह बुधवार को कृषि विज्ञान केन्द्र बीकानेर की ओर से स्वामी केशवानंद कृषि विश्वविद्यालय के विवेकानंद संग्रहालय सभागार में आयोजित मूंगफली उत्पादन की उन्नत तकनीकी कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। कार्यक्रम में समूह प्रथम पंक्ति प्रदर्शन के तहत मंडाल, बीठनोक, बेनीसर, शोभासर, कावनी गांव के कुल 110 किसानों को मूंगफली की किस्म आरजी-110 का प्रदर्शन लगाने के लिए 20-20 किलो आदान प्रदान किया गया। प्रो. सिंह ने बताया कि पूरे विश्व के श्री अन्न (मिलेट्स) का 40 फीसदी उत्पादन भारत में होता है और भारत के कुल मिलेट्स उत्पादन का 50 फीसदी हिस्सा राजस्थान से आता है लिहाजा राजस्थान पूरे विश्व में श्री अन्न (मिलेट्स) के उत्पादन में अग्रणी भूमिका निभा सकता है। उन्होने बताया कि श्री अन्न का पौधा वातावरण की कार्बन-डाइ-ऑक्साइड को ग्रहण कर उसे जमीन और प्लांट में डालता है और ऑक्सीजन छोड़ता है लिहाजा श्री अन्न इस प्लानेट को शुद्ध कर रहा है। क्लाइमेट चेंज के तनाव को कम कर रहा है। प्रो. सिंह ने बताया कि कार्बन इकोनॉमी को लेकर यूनाइटेड नेशन्स ने बहुत बड़ा फंड इकट्ठा किया है। इस फंड को भारत सरकार यूनाइटेड नेशन्स से लेकर मिलेट्स के किसानों को बांटे ताकि मिलेट्स की खेती को और बढ़ावा दिया जा सके। उन्होंने बताया कि मिलेट्स में गेहूं से तीन गुना ज्यादा और चावल से दस गुना ज्यादा फाइबर होता है। लिहाजा मिलेट्स उत्पादन को प्रमोट करने की आवश्यकता है। साथ ही बताया कि पिछले साल दिल्ली में हुए जी-20 सम्मेलन में भारत की अंतरराष्ट्रीय स्तर पर महत्व बढ़ाने में मिलेट्स उत्पादन में नंबर वन होने के चलते राजस्थान ने अहम भूमिका निभाई। यूनाइटेड नेशन्स ने मिलेट्स की महत्ता को देखते हुए ही वर्ष 2023 को अंतर्राष्ट्रीय श्री अन्न वर्ष घोषित किया था। इससे पूर्व कुलपति डॉ अरूण कुमार ने कहा कि फसलों के मूल्य संवर्धन से किसान अपनी आय बढ़ा सकता है। अनुसंधान निदेशक डॉ पीएस शेखावत ने किसानों को समय पर बुवाई, बीज को उपचारित कर बोने, बीज की सही मात्रा बोने समेत अन्य जानकारी दी। प्रसार निदेशक डॉ सुभाष चंद्र ने केवीके के कार्यों व उनकी उपलब्धियों के बारे में विस्तार से बताया। किसानों ने भी अपनी समस्याएं कृषि वैज्ञानिकों को बताई। उपनिदेशक प्रसार डॉ राजेश कुमार वर्मा ने धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम में सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय की अधिष्ठाता डॉ विमला डुकवाल, भू सादृश्यता एवं राजस्व सृजन निदेशक डॉ दाताराम, मानव संसाधन निदेशालय निदेशक डॉ ए.के.शर्मा, डीपीएमई डॉ योगेश शर्मा, अतिरिक्त निदेशक बीज डॉ पी.सी.गुप्ता, इं जे.के.गौड़, केवीके अध्यक्ष डॉ दुर्गा सिंह, कृषि पर्यवेक्षक श्री राजेन्द्र सिंह शेखावत समेत बड़ी संख्या में किसान उपस्थित रहे। मंच संचालन डॉ केशव मेहरा ने किया।

राजस्थान में मूंगफली व सरसों की खेती को और बढ़ावा देने की जरूरतः प्रो. सिंह

श्रीगंगानगर केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय इम्फाल के पूर्व कुलाधिपति व कृषि वैज्ञानिक चयन मंडल नई दिल्ली के पूर्व अध्यक्ष पद्मभूषण प्रो. रामबदन सिंह ने कहा है कि राजस्थान में मूंगफली और सरसों की खेती को और बढ़ावा देने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि भारत हर साल खाने के तेल का करीब 60 फीसदी विदेश से आयात कर देश में आपूर्ति करता है। जिस पर प्रतिवर्ष करीब 50 हजार करोड़ रू. खर्च होते हैं। प्रो. सिंह ने कहा कि राजस्थान मूंगफली और सरसों के उत्पादन में पूरे देश में अग्रणी है लिहाजा राजस्थान और देश के अन्य राज्यों में जहां मूंगफली और सरसों का उत्पादन होता है, उसे बढ़ाने की जरूरत है। इससे हम प्रतिवर्ष 5 से10 फीसदी तक खाने के तेल का उत्पादन बढ़ा सकेंगे और आने वाले चार पांच सालों में ही भारत खाने के तेल को आयात करने से मुक्त हो सकता है। प्रो. सिंह आज बीकानेर में कृषि विज्ञान केन्द्र की ओर से स्वामी केशवानंद कृषि विश्वविद्यालय के विवेकानंद संग्रहालय सभागार में आयोजित मूंगफली उत्पादन की उन्नत तकनीकी

कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। कार्यक्रम में समूह प्रथम पंक्ति प्रदर्शन के तहत मंडाल, बीठनोक, बेनीसर, शोभासर, कावनी गांव के कुल 110 किसानों को मूंगफली की किस्म आरजी-110 का प्रदर्शन लगाने के लिए 20-20 किलो आदान प्रदान किया गया। प्रो. सिंह ने बताया कि पूरे विश्व के अन्न (मिलेट्स) का 40 फीसदी उत्पादन भारत में होता है और भारत के कुल मिलेट्स उत्पादन का 50 फीसदी हिस्सा राजस्थान से आता है लिहाजा राजस्थान पूरे विश्व में अन्न (मिलेट्स) के उत्पादन में अग्रणी भूमिका निभा सकता है। उन्होने बताया कि अन्न का पौधा वातावरण की कार्बन-डाइ-ऑक्साइड को ग्रहण कर उसे जमीन और प्लांट में डालता है और ऑक्सीजन छोड़ता है लिहाजा अन्न इस प्लानेट को शुद्ध कर रहा है। क्लाइमेट चेंज के तनाव को कम कर रहा है। प्रो. सिंह ने बताया कि कार्बन इकोनॉमी को लेकर यूनाइटेड नेशन्स ने बहुत बड़ा फंड इकट्ठा किया है। इस फंड को भारत सरकार यूनाइटेड नेशन्स से लेकर मिलेट्स के किसानों को बांटे ताकि मिलेट्स की खेती को और बढ़ावा दिया जा सके। उन्होंने बताया कि मिलेट्स में गेहूं से तीन गुना ज्यादा और चावल से दस गुना ज्यादा फाइबर होता है। लिहाजा मिलेट्स उत्पादन को प्रमोट करने की आवश्यकता है। साथ ही बताया कि पिछले साल दिल्ली में हुए जी-20 सम्मेलन में भारत की अंतरराष्ट्रीय स्तर पर महत्व बढ़ाने में मिलेट्स उत्पादन में नंबर वन होने के चलते राजस्थान ने अहम भूमिका निभाई। यूनाइटेड नेशन्स ने मिलेट्स की महत्ता को देखते हुए ही वर्ष 2023 को अंतर्राष्ट्रीय अन्न वर्ष घोषित किया था। इससे पहले कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ अरूण कुमार ने कहा कि फसलों के मूल्य संवर्धन से किसान अपनी आय बढ़ा सकता है। अनुसंधान निदेशक डॉ पीएस शेखावत ने किसानों को समय पर बुवाई, बीज को उपचारित कर बोने, बीज की सही मात्रा बोने समेत अन्य जानकारी दी। प्रसार निदेशक डॉ सुभाष चंद्र ने केवीके के कार्यों व उनकी उपलब्धियों के बारे में विस्तार से बताया। किसानों ने भी अपनी समस्याएं कृषि वैत्रानिकों को बताई। उपनिदेशक प्रसार डॉ राजेश कुमार वर्मा ने धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम में सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय की अधिष्ठाता डॉ विमला डुकवाल, भू सादृश्यता एवं राजस्व सृजन निदेशक डॉ दाताराम, मानव संसाधन निदेशालय निदेशक डॉ ए.के.शर्मा, डीपीएमई डॉ योगेश शर्मा, अतिरिक्त निदेशक बीज डॉ पी.सी.गुप्ता, इं जे.के.गौड़, केवीके अध्यक्ष डॉ दुर्गा सिंह, कृषि पर्यवेक्षक राजेन्द्र सिंह शेखावत समेत बड़ी संख्या में किसान उपस्थित रहे। मंच संचालन डॉ केशव मेहरा ने किया।

गोविंद शर्मा पर केंद्रित 'बालवाटिका' के अंक का विमोचन 17 जून को

हनुमानगढ़। जिले में संगरिया के वरिष्ठ बाल साहित्य रचनाकार एवं साहित्य अकादेमी से पुरस्कृत गोविंद शर्मा पर केंद्रित भीलवाड़ा की बाल साहित्य पत्रिका 'बालवाटिका' के अंक का विमोचन 17 जून को सायं पांच बजे श्रीगंगानगर में जवाहरनगर स्थित महाराजा अग्रसेन विद्या मंदिर समिति में सृजन सेवा संस्थान के तत्वावधान में होगा। सृजन के अध्यक्ष डॉ. अरुण शहैरिया 'ताइर' ने बताया कि कार्यक्रम के मुख्य अतिथि विधायक जयदीप बिहाणी होंगे। अध्यक्षता यादे माटी कला बोर्ड के अध्यक्ष प्रहलाद राय टाक करेंगे। सान्निध्य बालवाटिका के सम्पादक डॉ. भैरूलाल गर्ग का होगा। वरिष्ठ साहित्यकार एवं उप

राजस्थान में मूंगफली व सरसों की खेती को और बढ़ावा देने की जरूरत-पद्म भूषण प्रो. रामबदनसिंह

श्रीगंगानगर,12 जून। केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय इम्फाल के पूर्व कुलाधिपति व कृषि वैज्ञानिक चयन मंडल नई दिल्ली के पूर्व अध्यक्ष पद्मभूषण प्रो. रामबदनसिंह ने कहा है कि राजस्थान में मूंगफली और सरसों की खेती को और बढ़ावा देने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि भारत हर साल खाने के तेल का करीब 60 फीसदी विदेश से आयात कर देश में आपूर्ति करता है। जिस पर प्रतिवर्ष करीब 50 हजार करोड़ रू. खर्च होते हैं। प्रो. सिंह ने कहा कि राजस्थान मूंगफली और सरसों के उत्पादन में पूरे देश में अग्रणी है लिहाजा राजस्थान और देश के अन्य राज्यों में जहां मूंगफली और सरसों का उत्पादन होता है, उसे बढ़ाने की जरूरत है। इससे हम प्रतिवर्ष 5 से10 फीसदी तक खाने के तेल का उत्पादन बढ़ा सकेंगे और आने वाले चार पांच सालों में ही भारत खाने के तेल को आयात करने से मुक्त हो सकता है। प्रो. सिंह आज बीकानेर में कृषि विज्ञान केन्द्र की ओर से स्वामी केशवानंद कृषि विश्वविद्यालय के विवेकानंद संग्रहालय सभागार में आयोजित मूंगफली उत्पादन की उन्नत तकनीकी कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। कार्यक्रम में समूह प्रथम पंक्ति प्रदर्शन के तहत मंडाल, बीठनोक, बेनीसर, शोभासर, कावनी गांव के कुल 110 किसानों को मूंगफली की

किस्म आरजी-110 का प्रदर्शन लगाने के लिए 20-20 किलो आदान प्रदान किया गया।

प्रो. सिंह ने बताया कि पूरे विश्व के श्री अन्न (मिलेट्स) का 40 फीसदी उत्पादन भारत में होता है और भारत के कुल मिलेट्स उत्पादन का 50 फीसदी हिस्सा राजस्थान से आता है लिहाजा राजस्थान पूरे विश्व में श्री अन्न (मिलेट्स) के उत्पादन में अग्रणी भूमिका निभा सकता है। उन्होने बताया कि श्री अन्न का पौधा वातावरण की कार्बन-डाइ-ऑक्साइड को ग्रहण कर उसे जमीन और प्लांट में डालता है और ऑक्सीजन छोड़ता है लिहाजा श्री अन्न इस प्लानेट को शुद्ध कर रहा है। क्लाइमेट चेंज के तनाव को कम कर रहा है।प्रो. सिंह ने बताया कि कार्बन इकोनॉमी को लेकर यूनाइटेड नेशन्स ने बहुत बड़ा फंड इकट्ठा किया है। इस फंड को भारत सरकार यूनाइटेड नेशन्स से लेकर मिलेट्स के किसानों को बांटे ताकि मिलेट्स की खेती को और बढ़ावा दिया जा सके। उन्होंने बताया कि मिलेट्स में गेहूं से तीन गुना ज्यादा और चावल से दस गुना ज्यादा फाइबर होता है। लिहाजा मिलेट्स उत्पादन को प्रमोट करने की आवश्यकता है। साथ ही बताया कि पिछले साल दिल्ली में हुए जी-20 सम्मेलन में भारत की अंतरराष्ट्रीय स्तर पर महत्व बढ़ाने में मिलेट्स उत्पादन में नंबर वन होने के चलते राजस्थान ने अहम भूमिका निभाई। यूनाइटेड नेशन्स ने मिलेट्स की महत्ता को देखते हुए ही वर्ष 2023 को अंतर्राष्ट्रीय श्री अन्न वर्ष घोषित किया था। इससे पहले कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ अरूण कुमार ने कहा कि फसलों के मूल्य संवर्धन से किसान अपनी आय बढ़ा सकता है। अनुसंधान निदेशक डॉ पीएस शेखावत ने किसानों को समय पर बुवाई, बीज को उपचारित कर बोने, बीज की सही मात्रा बोने समेत अन्य जानकारी दी। प्रसार निदेशक डॉ सुभाष चंद्र ने केवीके के कार्यों व उनकी उपलब्धियों के बारे में विस्तार से बताया। किसानों ने भी अपनी समस्याएं कृषि वैत्रानिकों को बताई। उपनिदेशक प्रसार डॉ राजेश कुमार वर्मा ने धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम में सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय की अधिष्ठाता डॉ विमला डुकवाल, भू सादृश्यता एवं राजस्व सृजन निदेशक डॉ दाताराम, मानव संसाधन निदेशालय निदेशक डॉ ए.के.शर्मा, डीपीएमई डॉ योगेश शर्मा, अतिरिक्त निदेशक बीज डॉ पी.सी.गुप्ता, इं जे.के.गौड़, केवीके अध्यक्ष डॉ दुर्गा सिंह, कृषि पर्यवेक्षक श्री राजेन्द्र सिंह शेखावत समेत बड़ी संख्या में किसान उपस्थित रहे। मंच संचालन डॉ केशव मेहरा ने किया।

पूरे विश्व में राजस्थान निभा सकता है

श्री अन्न (मिलेट्स) उत्पादन में अग्रणी भूमिका : पद्म भूषण प्रो. राम बदन सिंह

■ जलतेदीप निसं, बीकानेर

केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय इम्फाल के पूर्व कुलाधिपति व कृषि वैज्ञानिक चयन मंडल नई दिल्ली के पूर्व अध्यक्ष पद्मभूषण प्रो. राम बदन सिंह ने कहा है कि राजस्थान में मूंगफली और सरसों की खेती को और बढ़ावा देने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि भारत हर साल खाने के तेल का करीब 60 फीसदी विदेश से आयात कर देश में आपूर्ति करता है। जिस पर प्रतिवर्ष करीब 50 हजार करोड़ रू. खर्च होते हैं। प्रो. सिंह ने कहा कि राजस्थान मूंगफली और सरसों के उत्पादन में पूरे देश में अग्रणी है लिहाजा राजस्थान और देश के अन्य राज्यों में जहां मूंगफली और सरसों का उत्पादन होता है, उसे बढ़ाने की जरूरत है। इससे हम प्रतिवर्ष 5 से10 फीसदी तक खाने के तेल का उत्पादन बढ़ा सकेंगे और आने वाले चार पांच सालों में ही भारत खाने के तेल को आयात करने से मुक्त हो सकता है।

प्रो. सिंह बुधवार को कृषि विज्ञान केन्द्र बीकानेर की ओर से स्वामी केशवानंद कृषि विश्वविद्यालय के विवेकानंद संग्रहालय सभागार में आयोजित मूंगफली उत्पादन की उन्नत तकनीकी कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। कार्यक्रम में समूह प्रथम पंक्ति प्रदर्शन के तहत मंडाल, बीठनोक, बेनीसर, शोभासर, कावनी गांव के कुल 110 किसानों को मूंगफली की किस्म आरजी-110 का प्रदर्शन लगाने के लिए आदान प्रदान किया गया।

प्रो. सिंह ने बताया कि पूरे विश्व के श्री अन्न (मिलेट्स) का 40 फीसदी उत्पादन भारत में होता है और भारत के कुल मिलेट्स उत्पादन का 50 फीसदी हिस्सा राजस्थान से आता है लिहाजा राजस्थान पूरे विश्व में श्री अन्न (मिलेट्स) के उत्पादन में अग्रणी भूमिका निभा सकता है। उन्होने बताया कि श्री अन्न का पौधा वातावरण की कार्बन-डाइ-ऑक्साइड को ग्रहण कर उसे जमीन और प्लांट में डालता है और ऑक्सीजन छोड़ता है लिहाजा श्री अन्न इस प्लानेट को शुद्ध कर रहा है। क्लाइमेट चेंज के तनाव को कम कर रहा है।

प्रो. सिंह ने बताया कि कार्बन इकोनॉमी को लेकर यूनाइटेड नेशन्स ने बहुत बड़ा फंड इकट्ठा किया है। इस फंड को भारत सरकार यूनाइटेड नेशन्स से लेकर मिलेट्स के किसानों को बांटे ताकि मिलेट्स की खेती को और बढ़ावा दिया जा सके। उन्होंने बताया कि मिलेट्स में गेहूं से तीन गुना ज्यादा और चावल से दस गुना ज्यादा फाइबर होता है। लिहाजा मिलेट्स उत्पादन को प्रमोट करने की आवश्यकता है।

क पदम मेहता द्वारा दीपक ऑफसेट प्रिंटर्स, जे-10, झालाना संस्थानिक क्षेत्र, जयपुर से मुद्रित तथा जलतेदीप कार्यालय ई-287, लालकोठी, जयपुर से प्रकाशित फोनः 2742

राजस्थान में मूंगफली और सरसों की खेती को और बढ़ावा देने की जरूरत-पद्म भूषण प्रो. राम बदन सिंह

केवीके बीकानेर के मूंगफली उत्पादन की उन्नत तकनीकी कार्यक्रम में बोले प्रो. सिंह

प्रशान्त ज्योति न्यूज

बीकानेर। केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय इम्फाल के पूर्व कुलाधिपति व कृषि वैज्ञानिक चयन मंडल नई दिल्ली के पूर्व अध्यक्ष पद्मभूषण प्रो. राम बदन सिंह ने कहा है कि राजस्थान में मूंगफली और सरसों की खेती को और बढ़ावा देने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि भारत हर साल खाने के तेल का करीब 60 फीसदी विदेश से आयात कर देश में आपूर्ति करता है। जिस पर प्रतिवर्ष करीब 50 हजार करोड़ रू. खर्च होते हैं। प्रो. सिंह ने कहा कि राजस्थान मूंगफली और सरसों के उत्पादन में पूरे देश में अग्रणी है लिहाजा राजस्थान और देश के अन्य राज्यों में जहां मूंगफली और सरसों का उत्पादन होता है, उसे बढ़ाने की जरूरत है। इससे हम प्रतिवर्ष 5 से10 फीसदी तक खाने के तेल का उत्पादन बढ़ा सकेंगे और आने वाले चार पांच सालों में ही भारत खाने के तेल को आयात करने से मुक्त हो सकता है। प्रो. सिंह बुधवार को कृषि विज्ञान केन्द्र बीकानेर की ओर से स्वामी केशवानंद कृषि विश्वविद्यालय के विवेकानंद संग्रहालय सभागार में आयोजित मूंगफली उत्पादन की उन्नत तकनीकी कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। कार्यक्रम में समूह प्रथम पंक्ति प्रदर्शन के तहत मंडाल, बीठनोक, बेनीसर, शोभासर, कावनी गांव के कुल 110 किसानों को मूंगफली की किस्म आरजी-110 का प्रदर्शन लगाने के लिए 20-20 किलो आदान प्रदान किया गया।

प्रो. सिंह ने बताया कि कार्बन इकोनॉमी को लेकर यूनाइटेड नेशन्स ने बहुत बड़ा फंड इकट्ठा किया है। इस फंड को भारत सरकार यूनाइटेड नेशन्स से लेकर मिलेट्स के किसानों को बांटे ताकि मिलेट्स की खेती को और बढ़ावा दिया जा सके। उन्होंने बताया कि मिलेट्स में गेहूं से तीन गुना ज्यादा और चावल से दस गुना ज्यादा फाइबर होता है। लिहाजा मिलेट्स उत्पादन को प्रमोट करने की आवश्यकता है।

इससे पूर्व कुलपति डॉ अरूण कुमार ने कहा कि फसलों के मूल्य संवर्धन से किसान अपनी आय बढ़ा सकता है। अनुसंधान निदेशक डॉ पीएस शेखावत ने किसानों को समय पर बुवाई, बीज को उपचारित कर बोने, बीज की सही मात्रा बोने समेत अन्य जानकारी दी। प्रसार निदेशक डॉ सुभाष चंद्र ने केवीके के कार्यों व उनकी उपलब्धियों के बारे में विस्तार से बताया। किसानों ने भी अपनी समस्याएं कृषि वैज्ञानिकों को बताई। उपनिदेशक प्रसार डॉ राजेश कुमार वर्मा ने धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम में सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय की अधिष्ठाता डॉ विमला डुकवाल, भू सादृश्यता एवं राजस्व सृजन निदेशक डॉ दाताराम,

मानव संसाधन निदेशालय निदेशक डॉ ए.के.शर्मा, डीपीएमई डॉ योगेश शर्मा, अतिरिक्त निदेशक बीज डॉ पी.सी.गुप्ता, इं जे.के.गौड़, केवीके अध्यक्ष डॉ दुर्गा सिंह, कृषि पर्यवेक्षक राजेन्द्र सिंह शेखावत समेत बड़ी संख्या में किसान उपस्थित रहे। मंच संचालन डॉ केशव मेहरा ने किया।

प्रशान्त ज्योति की स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक प्रमिला बंसल श्रीवास्तव के द्वारा युधिष्ठिर ऑफसैट प्रिण्टर्स, 01-02-पटेल मार्केट, श्रीगंगानगर, राजस्थान से मुद्रित एवं 9 इन्डस्ट्रीयल एरिया, श्रीगंगानगर, राजस्थान से प्रकाशित » सम्पादक : प्रमिला बंसल श्रीवास्तव : सह-सम्पादक : वीरज बंसल » दूरभाष : 0154-355

मूंगफली और सरसों की खेती को और बढ़ावा देने की जरूरत

बीकानेर @ पत्रिका. कृषि विज्ञान केंद्र की ओर से स्वामी केशवानंद कृषि विश्वविद्यालय के विवेकानंद संग्रहालय सभागार में मूंगफली उत्पादन की उन्नत तकनीक पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस दौरान पद्मभूषण प्रो. राम बदन सिंह ने कहा है कि राजस्थान में मूंगफली और सरसों की खेती को और बढ़ावा देने की जरूरत है। भारत हर साल खाने के तेल का करीब 60 फीसदी विदेश से आयात कर देश में आपूर्ति करता है। जिस पर प्रतिवर्ष करीब 50 हजार करोड़ रुपए खर्च होते हैं।

प्रो. सिंह ने कहा कि राजस्थान मूंगफली और सरसों के उत्पादन में पूरे देश में अग्रणी है, लिहाजा राजस्थान और देश के अन्य राज्यों में जहां मूंगफली और सरसों का उत्पादन होता है, उसे बढ़ाने की जरूरत है। इससे हम प्रतिवर्ष 5 से 10 फीसदी तक खाने के तेल का उत्पादन बढ़ा सकेंगे और आने वाले चार-पांच सालों में ही भारत खाने के तेल को आयात करने से मुक्त हो सकता है। कुलपति डॉ. अरूण कुमार ने कहा कि फसलों के मूल्य संवर्धन से किसान अपनी आय बढ़ा सकता है। अनुसंधान निदेशक डॉ. पीएस शेखावत ने किसानों को समय पर बुवाई, बीज को उपचारित कर बोने, बीज की सही मात्रा बिजाई समेत अन्य जानकारी दी। प्रसार निदेशक डॉ. सुभाष चंद्र ने केवीके के कार्यों व उनकी उपलब्धियों के बारे में विस्तार से बताया। किसानों ने भी अपनी समस्याएं कृषि वैज्ञानिकों को बताई। कार्यक्रम में उपनिदेशक प्रसार डॉ. राजेश कुमार वर्मा, सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय की अधिष्ठाता डॉ. विमला डुकवाल, भू सादृश्यता एवं राजस्व सृजन निदेशक डॉ. दाताराम, मानव संसाधन निदेशालय निदेशक डॉ. एके शर्मा सहित अन्य उपस्थित रहे।

प्रेस नोट
स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर
Date- 12.06.2024

राजस्थान में मूंगफली और सरसों की खेती को और बढ़ावा देने की जरूरत-पद्म भूषण प्रो. राम बदन सिंह
पूरे विश्व में राजस्थान निभा सकता है श्री अन्न (मिलेट्स) उत्पादन में अग्रणी भूमिका- पद्म भूषण प्रो. राम बदन सिंह
केवीके बीकानेर के मूंगफली उत्पादन की उन्नत तकनीकी कार्यक्रम में बोले प्रो. सिंह
समूह प्रथम पंक्ति प्रदर्शन के तहत कुल 110 किसानों को मूंगफली का आदान प्रदान किया गया

बीकानेर, 12 जून। केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय इम्फाल के पूर्व कुलाधिपति व कृषि वैज्ञानिक चयन मंडल नई दिल्ली के पूर्व अध्यक्ष पद्मभूषण प्रो. राम बदन सिंह ने कहा है कि राजस्थान में मूंगफली और सरसों की खेती को और बढ़ावा देने की जरूरत है। उन्होने कहा कि भारत हर साल खाने के तेल का करीब 60 फीसदी विदेश से आयात कर देश में आपूर्ति करता है। जिस पर प्रतिवर्ष करीब 50 हजार करोड़ रू. खर्च होते हैं। प्रो. सिंह ने कहा कि राजस्थान मूंगफली और सरसों के उत्पादन में पूरे देश में अग्रणी है लिहाजा राजस्थान और देश के अन्य राज्यों में जहां मूंगफली और सरसों का उत्पादन होता है, उसे बढ़ाने की जरूरत है। इससे हम प्रतिवर्ष 5 से10 फीसदी तक खाने के तेल का उत्पादन बढ़ा सकेंगे और आने वाले चार पांच सालों में ही भारत खाने के तेल को आयात करने से मुक्त हो सकता है।

प्रो. सिंह बुधवार को कृषि विज्ञान केन्द्र बीकानेर की ओर से स्वामी केशवानंद कृषि विश्वविद्यालय के विवेकानंद संग्रहालय सभागार में आयोजित मूंगफली उत्पादन की उन्नत तकनीकी कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। कार्यक्रम में समूह प्रथम पंक्ति प्रदर्शन के तहत मंडाल, बीठनोक, बेनीसर, शोभासर, कावनी गांव के कुल 110 किसानों को मूंगफली की किस्म आरजी-110 का प्रदर्शन लगाने के लिए आदान प्रदान किया गया।

प्रो. सिंह ने बताया कि पूरे विश्व के श्री अन्न (मिलेट्स) का 40 फीसदी उत्पादन भारत में होता है और भारत के कुल मिलेट्स उत्पादन का 50 फीसदी हिस्सा राजस्थान से आता है लिहाजा राजस्थान पूरे विश्व में श्री अन्न (मिलेट्स) के उत्पादन में अग्रणी भूमिका निभा सकता है। उन्होने बताया कि श्री अन्न का पौधा वातावरण की कार्बन-डाइ-ऑक्साइड को ग्रहण कर उसे जमीन और प्लांट में डालता है और ऑक्सीजन छोड़ता है लिहाजा श्री अन्न इस प्लानेट को शुद्ध कर रहा है। क्लाइमेट चेंज के तनाव को कम कर रहा है।

प्रो. सिंह ने बताया कि कार्बन इकोनॉमी को लेकर यूनाइटेड नेशन्स ने बहुत बड़ा फंड इकट्ठा किया है। इस फंड को भारत सरकार यूनाइटेड नेशन्स से लेकर मिलेट्स के किसानों को बांटे ताकि मिलेट्स की खेती को और बढ़ावा दिया जा सके। उन्होंने बताया कि मिलेट्स में गेहूं से तीन गुना ज्यादा और चावल से दस गुना ज्यादा फाइबर होता है। लिहाजा मिलेट्स उत्पादन को प्रमोट करने की आवश्यकता है। साथ ही बताया कि पिछले साल दिल्ली में हुए जी-20 सम्मेलन में भारत की अंतरराष्ट्रीय स्तर पर महत्व बढ़ाने में मिलेट्स उत्पादन में नंबर वन होने के चलते राजस्थान ने अहम भूमिका निभाई। यूनाइटेड नेशन्स ने मिलेट्स की महत्ता को देखते हुए ही वर्ष 2023 को अंतर्राष्ट्रीय श्री अन्न वर्ष घोषित किया था।

इससे पूर्व कुलपति डॉ अरूण कुमार ने कहा कि फसलों के मूल्य संवर्धन से किसान अपनी आय बढ़ा सकता है। अनुसंधान निदेशक डॉ पीएस शेखावत ने किसानों को समय पर बुवाई, बीज को उपचारित कर बोने, बीज की सही मात्रा बोने समेत अन्य जानकारी दी। प्रसार निदेशक डॉ सुभाष चंद्र ने केवीके के कार्यों व उनकी उपलब्धियों के बारे में विस्तार से बताया। किसानों ने भी अपनी समस्याएं कृषि वैत्रानिकों को बताई। उपनिदेशक प्रसार डॉ राजेश कुमार वर्मा ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

कार्यक्रम में सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय की अधिष्ठाता डॉ विमला डुकवाल, भू सादृश्यता एवं राजस्व सृजन निदेशक डॉ दाताराम, मानव संसाधन निदेशालय निदेशक डॉ ए.के.शर्मा, डीपीएमई डॉ योगेश शर्मा, अतिरिक्त निदेशक बीज डॉ पी.सी.गुप्ता, इं जे.के.गौड़, केवीके अध्यक्ष डॉ दुर्गा सिंह, कृषि पर्यवेक्षक श्री राजेन्द्र सिंह शेखावत समेत बड़ी संख्या में किसान उपस्थित रहे। मंच संचालन डॉ केशव मेहरा ने किया।